डॉ. शशि भूषण
अतिथि सहायक प्राध्यापक
हिन्दी विभाग
एस. आर. ए. पी. कॉलेज,
बारा चकिया।

Ajanta
Page No.
Date

'कितने चौराहे' का कथानक (भाग-1)

'कितने चौराहे' में एक किशोर के मन में उठने वाली जिज्ञासा और कौतुहल के साथ, आजादी के लड़ाई के दिनों में उठने वाले नव-जागरण को चित्रित किया है। इस नव-जागरण के कई रूप थे। एक तरफ देश के आजादी के लिए गांधी जी के नेतृत्व में सत्याग्रह का सिलसिला चल रहा था तो दूसरी तरफ कुछ लोग भावी भारत के निर्माण के लिए नव युवकों को दृढ़ प्रतिज्ञा, सच्चरित्र और त्यागपूर्ण जीवन की ओर प्रेरित कर रहे थे।

किशोर मनमोहन का प्रवेश 'अररिया हाईस्कूल में उसके पिता इसलिए कराते हैं कि मनमोहन शहरी विद्यार्थियों की तरह समझदार और तेज बनें। स्कूल के पहले ही दिन मनमोहन को बड़े अजीब अनुभव होते हैं। गाँव के इस लड़के के कक्ष में घुसते ही हिस्ट्री टीचर जब उस व्यंग्य वाण कसते हैं, तो उसकी आँखे नम हो उठती है। मनमोहन के रहने की व्यवस्था एक मोहर्रिर के घर है, जो कोर्ट में काम करता है। दूसरे दिन सबेरे जब वह मोहर्रिर के लड़के मटरू के साथ शौच के लिए जाता है तो उसका परिचय

पास-पड़ोस रहने वाले अन्य लड़कों से होता है। लड़कों से बातचीत के सिलसिले में उसे स्कूल के और उसके शिक्षकों के बारे में बड़ी दिलचस्प बातें मालूम होती है। "हेड मास्टर साहब तीन एम.ए. पास है, अंग्रेजी जिसको ठिकाने से पढ़ा दे वह अंग्रेजों में भी गलती निकाल दे। हाफीज साहब का विषय हिस्ट्री है। किताब देखकर अक्षर-अक्षर रटकर जवाब देने वालो को पूरा नम्बर देते हैं। अपनी भाषा में सही लिखने पर नम्बर काट लेते है। पढ़ाई से ज़्यादा फुटबॉल का किस्सा बताते है। स्कूल का सेक्रेटरी तो अपने आदमी है।" और ढ़ेर सारी बातें उसके सहपाठी बताते है।

क्रमशः जारी है...